International Journal of Applied Research 2015; 1(12): 913-915

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(12): 913-915
www.allresearchjournal.com
Received: 25-09-2015
Accepted: 29-10-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

निराला के काव्य में प्रगति–चेतना

डॉ. शिवदत्त शर्मा

साहित्य में प्रगतिवाद एक संगठित आन्दोलन बनकर उभरा है। वास्तव में सन् 1789 में फ्रांस क्रान्ति हुई उसके परिणाम स्वरूप मानवीय समानता, बन्धुत्व की भावना, स्वतन्त्रता आदि अनेक जीवन–मूल्यों को साहित्य में स्थान मिलने लगा। उसके उपरान्त साहित्य में यथार्थवादी कृतियों को अधिक से अधिक स्थान मिला। 19 वीं शताब्दी के अन्त तक यूरोप में कार्लमार्क्स तथा एंजल आदि मनीषियों ने कला और साहित्य को सामाजिक उत्थान एवं प्रगति का आधार मान लिया था। इसी प्रकिया में आगे चलकर भौतिकवादी, समाजवादी, एवं प्रगतिवादी जीवन–दर्शन पर आधारित सामाजिक प्रगति के काव्य को प्रगतिवादी अथवा प्रगतिशील काव्य कहा जाने लगा। सन् 1935 में पेरिस में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई। उसके तुरन्त बाद भारत में भी लखनउ में भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई। इस संघ के प्रथम अधिवेशन के सभापति मुंशी प्रेमचन्द बने। 1938 में हुए अधिवेशन की अध्यक्षता रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की थी। इसके साथ वामपंथियों का सम्बन्ध जुड गया। मार्क्सवादियों ने प्रारम्भ में राजनीति से दूरी बनाए रखी तथा धीरे धीरे मार्क्स वादी राजनीतिक दृष्टि से बंधकर प्रगतिशीलता ने प्रगतिवाद का रूप धारण कर लिया। इस तरह प्रगतिवाद की परिभाषा करते हुए यह कहा जाता है कि राजनीति के क्षेत्र में जिसे मार्क्सवाद कहते हैं वही साहित्यिक क्षेत्र में प्रगतिवाद हैं। [1]

प्रगतिवाद और प्रगतिशीलता में मौलिक अन्तर है। निराला की प्रगति चेतना का मूल्यांकन करने से पूर्व प्रगतिवाद और प्रगतिशीलता में अन्तर को जानना आवश्यक है। प्रगतिवादी लेखक मार्क्सवादी भौतिकवाद से अत्यधिक प्रभावित होता है। वह आत्मा–परमात्मा, धर्म, नरक–स्वर्ग आदि में कोई विश्वास नहीं रखता। उसका द्वन्द्वात्मक भौतिक विकास में ही विश्वास रखता है। वह इसी संसार को मानता है तथा किसी अलौकिक या आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास नहीं रखता।

प्रगतिवादी श्रम को ही महत्व देता है तथा वह मानता है कि मजदूर का श्रम सारी प्रगति का आधार है। पूंजीपति सदा ही लाभ को हथिया लेता है जबकि उस लाभ का उत्पादक मजदूर है। इस तरह समाज में शोषक और शोषित दो वर्गों का निर्माण हो जाता है। प्रगतिवादी पूंजीवादी व्यवस्था को समाप्त करने के लिए श्रमिक वर्ग को संगठित कर वर्ग संघर्ष के लिए तत्पर होता हैं। इसके लिए सशस्त्र क्रांति उस का प्रमुख हथियार है तथा हृदय परिवर्तन में विश्वास नहीं करता। प्रगतिवादी मानते हैं कि आजतक कला, साहित्य, शासन, राज्य, संस्कृति, धर्म, सभ्यता, आदि का जो विकास हुआ है, वह केवल पूंजीवादी शोषकों के हित में हुआ है। प्रगतिवादी धर्म, समाज, और जीवन की सभी रूढियों को समाप्त करना उसका लक्ष्य होता है। प्रगतिवादी मानते हैं कि ईश्वर, भाग्यवाद, धर्म, परम्परागत रीतिरिवाज ये सब कुछ ढकोसला है। स्पष्ट है कि प्रगतिवादी वर्गहीन समाज की स्थापना करना चाहता है तथा जनता की वाणी को बुलन्द करना उसका लक्ष्य हैं। डॉ कृष्णदेवझारी ने ठीक ही कहा है कि प्रगतिवाद से यदि, वाद की कट्टरता हटा दी जाए तो वह प्रगतिशील ही रह जाता है।

निराला चाहे प्रगतिशील कवि थे, परन्तु प्रगतिवादी कवि नहीं थे। उन्होंने न मार्क्सवादी विचारधारा का समर्थन किया और न ही अपनी कविता मे साम्यवाद का प्रचार किया। उनकी कविता रामविलास शर्मा, राहुल सांकृत्यायन, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन रांगेयराघव प्रकाशचन्द्रगुप्त, आदि प्रगतिवादियों से सर्वथा भिन्न थे। उन की कविता मं केदार नाथ की तरह हिंसात्मक वर्गसंघर्ष की ललकार नहीं लगाते– मारो मारो मारो हंसिया, हिंसा और अहिंसा क्या।

निराला का काव्य और प्रगति–चेतना

निराला सच्चे भक्त और ईश्वर में श्रद्धा रखने वाले व्यक्ति थे। आध्यात्म में उनकी पूर्ण आस्था थी। उन्होंने दूसरी ओर मानव मानव में विषमता का डट कर विरोध किया यही नहीं उन्होंने अपने इस दर्शन को अपनी कविता का विषय बनाया। तोडती पत्थर, भिक्षुक, विधवा, कुत्ता भौंकने लगा, आदि

कविताओं में निराला ने तथा कथित नरक, स्वर्ग, परलोक, आदि को त्याग कर लोक को महत्व दिया। फिर भी प्रगतिवादियों की तरह न तो वे ईश्वर में अविश्वास रखते हैं और न ही आत्मा तथा अध्यात्म का निषेद्ध करते हैं। प्रगति शील लेखक भी श्रम के महत्व को प्रतिपादित करते हैं तथा सामाजिक शोषण के विरोध में उनका स्वर मुखर है। प्रगतिशील लेखक पूंजी वादी और सामन्तवादी व्यवस्था को समाप्त करने के पक्षधर हैं। प्रगतिशील लेखक किसान और मजदूर को जागृत एवं सचेत करते हैं। यहां प्रगतिशील एवं प्रगविादी में विभाजक रेखा यही है कि जहां प्रगतिवादी हिंसात्मक एव ंविघ्वंसकारी क्रान्ति का पक्ष लेता है वहीं प्रगतिशील लेखक राजनीतिक दलों का विरोध करता हुआ केवल समाजवादी दल में विश्वास करता है। [2] प्रगतिशील लेखक केवल अर्थ को ही उन्नति का मूल आधार नहीं मानता। वह मानता है कि भौतिक विकास के साथसाथ आत्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विकास को भी उतना ही आवश्यक मानता है जितना अन्य वस्तुएं आवश्यक होतीं हैं। निराला भी मित्र के प्रति तथा सरोज स्मृति में वे परम्परागत रूढियों और प्राणपंथियों का विरोध करते हैं। दान में धार्मिक ढोंग पर कठोर प्रहार किया गया है तो निराला स्फटिक शिला और प्रेमगीत में यथार्थपरक वर्णन करते हैं। बादल राग, डिप्टीसाहब आए है, जल्द जल्द पैर बढाओ, आज अमीरों की हबेली किसानों की होगी, पाठशाला आदि कविताओं में कवि ने उद्बोधन और वर्गसंघर्ष को प्रेरणा प्रदान की है।

निराला में प्रगतिवादी प्रवृत्तियां

निराला के काव्य में प्रगतिवादी प्रवृत्तियां उनके परवर्ती काव्य में अधिक साफ दिखाई देतीं हैं। उनकी इस प्रकार की प्रवृत्तियां निम्नप्रकार से वर्णित है।

क शोषकों के प्रति आक्रोश– प्रगतिवादी होने के नाते निराला भी सामाजिक विषमताओं को दूर करने के पक्ष में थे। उनकी अनेक कविताएं इस का उदाहरण हैं। उनकी कविताओं में पूंजी पतियों को फटकार साफ दिखाई देती है। निराला का मत था कि शोषित वर्ग को इस दयनीय स्थिति तक पहुचाने वाले पूंजी पति ही हैं। उनकी कुकुरमुत्ता कविता इसका सशक्त उदाहरण है। इसमें कुकुरमत्ता गरीबएवं शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है तथा गुलाब उच्च वर्ग का प्रतीक है। [3]

अबे, सुन बे गुलाब
भूल मत जो पाई खुशबू, रंगोआब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डालपर इतराता है कैपीटलिस्ट।
कितनों को तूने बनाया है गुलाम,
माली कर रखा, सहारा जडाधाम।

पूंजी पतियों के प्रति उनका आक्रोश उनकी कविता में स्पष्ट दिखाई देता है। एक अन्य उदाहरण इस तथ्य को स्पष्ट कर देगा–

भेद कुल खुल जाए वह सूरत हमारे दिल में है।
देश को मिल जाए जो पूंजी तुम्हारी मिल में है।

ख शोषित–वर्ग के प्रति सहानुभूति– निराला की अनेक कविताओं में शोषितवर्ग के प्रति हार्दिक सहानुभूति दिखाई देती है। निराला स्वयं भुक्तभोगी थे इस लिए उनकी सहानुभूति में सहजता अनुभव होती है। अल्पायु में ही दुखों से युद्ध के कारण उनका स्वर बडा कर्कश है। समाज के उपेक्षित, शोषित एवं प्रताडित वर्ग के साथ उन्होंने साक्षात्कार किया था यही कारण है कि उनके काव्य मे शोषित वर्ग के प्रति विशेष सहानुभूति दिखाई देती है। बादलराग, भिक्षुक, विधवा, आदि कविताओं में उनके इस भाव को देखा जा सकता है। बादलराग कविता का एक उदाहरण देखिए–

जीर्ण बाहु है जीर्ण शरीर, तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर, चूस लिया है उसका सार
हाड मात्र ही है आधार, ऐ जीवन के पारावार।

इसी प्रकार भिक्षुक कविता में कवि ने भिक्षुक के चित्र को इस तरह पेश किया है कि सहज ही भिक्षुक के प्रति सहानुभूति उत्पन्न होने लगती है। [4]

वह आता, दो टूक कलेजे के करता पछताता,
पथ पर आता। पेट–पीठ ओनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक, मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को...

उनकी कविता विधवा इसी प्रकार विधवा की विवशता, अभाव, एवं मजबूरी की दास्तान की एक श्रृंखला है, उसके दुखों को सुनने वाला कोई नही, वह एक सीलन भरी कोठरी में बन्द किस प्रकार जीवन यापन करता है उसका चित्रण उनकी इस कविता में मिलता है–

वह इष्ट देव के मन्दिर की पूजा सी
वह दीपशिखा–सी शान्त भाव में लीन
वह क्रूर काल ताण्डव की स्मृति रेखा–सी
वह टूटे तरु की छूटी लता–सी दीन
दलित भारत की विधवा है।

ग सामाजिक यथार्थ का चित्रण– निराला की कविता में यथार्थ का चित्रण हुआ है। छायावादी युग में आम साधारण व्यक्ति के यथार्थ का चित्रण किया गया है जबकि उसके उपरान्त उन्होंने भारत के उस जनसाधारण का चित्रण किया है जो पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का शिकार है। निराला ने भिखारियों एवं शोषित श्रमिक महिलाओं की निस्सहाय अवस्था का कारुणिक वर्णन किया है। तोडती पत्थर कविता से एक उदाहरण देखिए–

चढ रही थी धूप, गर्मियों के दिन–
दिवा का तमतमाता हुआ रूप
उठी सुलसती हुइ लू, रुई ज्यों जलती हुई भू
गर्द चिनगी छा गयी।

इसी तरह भिक्षुक कविता में भी उन्होने भिक्षुक की दयनीय स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है–

साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए
बायें से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया–दृष्टि पाने की ओर बढाये।

घ रूढियों और जड–परम्पराओं का विरोध– निराला मूलतः सच्चे विद्रोही कवि थे उन्होंने अपने जीवन में हर तरह की रूढियों का डट कर विरोध किया। मुक्त छन्द की उद्भावना इसका ज्वलन्त उदाहरण है। सरोज–स्मृति में उन्होंने रूढियों का स्पष्ट विरोध किया है। [5] दान नामक कविता में वानरों को मालपुए खिलाकर पुण्य अर्जित करने वालों पर उनका व्यंग्य देखिए–

फिर सोचा मेरे पूर्वजगण, गुजरे जिस राह, वही शोभन
होगा मुझको यह लोक–रीति, कर दूं पूरी, गो नहीं भीति
कुछ नहीं तोडते गत विचार, पर पूर्ण रूप प्राचीन भार
ढोते मैं हूं अक्षम, निश्चय, आयेगी मुझमें नहीं विनय।

च क्रान्ति और नवनिर्माण की प्रेरणा– निराला उस व्यवस्था के धुर विरोधी थे जो जन साधारण का शोषण करती है। उनकी हार्दिक अभिलाषा थी कि सभी को समान अधिकार प्राप्त हों तथा सम्पूर्ण समाज का कल्याण हो। इस व्यवस्था के निर्माण में क्रान्ति ही एक शस्त्र है जिससे व्यवस्था को बदला जा सकता है। बादल इसी का ही प्रतीक है। जागो फिर एक बार में देश के युवकों को उद्‌बोधित करते हुए वे नव निर्माण की प्रेरणा देते हैं–

पशु नहीं वीर तुम, समर शूर क्रूर नहीं
क्ल चक्र में हो दबे आज तुम राज कुंवर।.....

छ साम्यवादी विचार धारा– प्रगति वाद मूलतः साम्यवादी विचारधारा पर आधृत है। वे प्रगतिवादी कवियों ने साम्यवाद का गुणगान मुक्त कण्ठ से किया है। [6] राजे ने अपनी रखवाली की नामक कविता में सामन्ती व्यवस्था पर वे चाटुकारों पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं।

राजे ने अपनी रखवाली की, किला बना रहा
बडीबडी फौजें रखीं–चापलूस कितने सामंत आये
मतलब की लडकी पकडे हुए कितने ब्राह्मण आये
पोथियों में जनता को बांधे हुए, कवियों ने उनकी बहादुरी के गीत गाए
लेखकों ने लेख लिखे।

इस सामन्त वादी व्यवस्था को बदल कर निराला साम्यवाद की स्थापना करना चाहते हैं। इस के लिए अमीरों की हवेलियों को पाठशालाओं में बदलना चाहते हैं जिससे अशिक्षा का अन्धकार दूर हो सके और आम आदमी भी सुविधा से शिक्षा प्राप्त कर सके–

आज अमीरों की हवेली, किसानों की होगी पाठशाला
धोबी, पासी, चमार, तेली, खोलेंगे अंधेरे का ताला
एक पाठ पढेंगे, टाट बिछाओ।

इस तरह निराला की तीन तरह की कविताएं मिलतीं हैं। पहली वे कविताएं हैं जो प्रकृति श्रृंगार और अध्यात्म चिन्तन को आधार बनाकर लिखी गईं हैं। अनामिका, गीतिका, तुलसीदास आदि इसी प्रकार की कविताएं हैं। दूसरी प्रकार की कविताएं प्रगति और प्रयोग से सम्बन्धित हैं। कुकुरमुत्ता बेला, नये पत्ते आदि इसी प्रकार की कविताएं हैं। तीसरी प्रकार की कविताएं वे हैं जो 1950 के बाद की हैं। इनमें कवि ने आत्म परक और अध्यात्म से सम्बन्धित कविताएं लिखीं हैं। निराला का प्रगतिवाद का दौर सन् 1941 से 1950 तक रहा है।

इस तरह कहा जा सकता है कि निराला हिन्दी की प्रगतिशील और प्रगतिवादी कवियों में शीर्ष स्थान के अधिकारी हैं। हिन्दी में प्रगतिवाद के प्रवर्तन का श्रेय निराला के सिवाय और किसे मिल सकता है।

सन्दर्भ सूचि

1. मनोज कुमार छायावादी सौंदर्य चेतना और निराला की काव्य दृष्टि पृ 111
2. रामविलास शर्मा हिन्दी के छाया वादी कवि पृ 76
3. डॉ रामदरश राय आधुनिक हिन्दी कविता में पौराणिक सन्दर्भों की पुनर्रचना पृ98
4. राम विलास शर्मा निराला की साहित्य साधना पृ 67
5. डॉ रामदरश राय छायावादी काव्य भाषा में अर्थतत्व पृ 176
6. डॉ मोहन अवस्थी हिन्दी साहित्य का अद्यतन इतिहास पृ 58